माड़ की लोककथा

कमेड़ी का गीत

एकलव्य

प्रभात

चित्रः सुनीता

माड़ की लोककथा

कमेड़ी का गीत

प्रभात

चित्रः सुनीता

एकलव्य

एक थी कमेड़ी। वो नदी किनारे रहती थी। झाड़ियों के बीच उसने काँटों-तिनकों से घोंसला बनाया था। घोंसले में अण्डे दिए थे। कुछ दिनों के बाद अण्डों में से बच्चे निकले।

प्रकृति की अनगिनत आवाज़ों में कमेड़ी के बच्चों की नई आवाज़ भी शामिल हो गई। अभी-अभी अण्डों से बाहर आए उन बच्चों की आवाज़ ऐसी थी जो दिखाई देती थी पर सुनाई नहीं देती थी। अभी उनके शरीर में सिर्फ पतली झिल्ली-सी खाल का पेट, झाड़ के बेर जितना सिर, आँखें और चोंच दिखाई दे रही थीं। कमेड़ी मुश्किल से ही कहीं इधर-उधर जाती। ज़्यादातर समय अपने बच्चों के पास ही बैठी रहती।

धीरे-धीरे बच्चे बड़े हो रहे थे। उनकी आवाज़ और भूख भी बड़ी हो रही थी। कमेड़ी अब उनके लिए चुग्गे की तलाश में दूर-दूर तक जाने लगी। दूर उसे एक बाड़ी मिल गई। इस बाड़ी में वो अपने खाने के लिए दाना आसानी से खोज लेती। पेट भर खाती और बच्चों के लिए चोंच में भरकर उड़ जाती।

इधर माली कई दिन से इस कमेड़ी को बाड़ी में आते देख रहा था। उसे लगा इस कमेड़ी ने यह एक ही जगह पकड़ ली है। और कहीं जाती ही नहीं। रोज़-रोज़ यहीं आ जाती है। ऐसे तो बाड़ी का कबाड़ा करके रख देगी। इसका कुछ अच्छा-सा इलाज करना पड़ेगा। रात को ऐसा सोचते-सोचते वह सो गया। सुबह उसने पहले बाड़ी में बेलों और पौधों में पानी देने के लिए मोटर चलाई। फिर कुछ खरपतवार उखाड़ी। तभी उसे कमेड़ी उड़ती हुई आती दिखाई दी। माली ने रात से ही एक धागा खूँटी पर टाँगा हुआ था। उसने बड़ी होशियारी से बेलों की क्यारी में कमेड़ी को जा पकड़ा।

उसके चंगुल में कमेड़ी फड़फड़ाने लगी – "मुझे क्यूँ पकड़ रहे हो? क्यूँ बाँध रहे हो? छोड़ो। मैंने क्या किया है? अब कभी इस बाड़ी में नहीं आऊँगी। मेरे बच्चे छोटे हैं। इसीलिए मैं यहाँ तक आकर वापस चली जाती हूँ। कल से दूर जाऊँगी, यहाँ नहीं आऊँगी। मेरे बच्चे मेरी बाट देखेंगे। वे भूखे हैं। मेरे बिना वे मर जाएँगे।"

कमेड़ी फड़फड़ाती रही। गिड़गिड़ाती रही। लेकिन माली ने एक न सुनी। उसने धागे के एक सिरे से उसके पंजे को बाँधा और दूसरा सिरा एक बेल की जड़ से बाँध दिया।

कमेड़ी अब फड़फड़ाना बन्द कर चुकी थी। वो बाड़ी में बँधी हुई थी। उसे अपने बच्चों की याद आ रही थी। नदी किनारे के कीड़ों-मकोड़ों और दूसरे जीव-जन्तुओं के चित्र उसकी आँखों के सामने आ-जा रहे थे। उसके मन में डर बढ़ रहा था। कोई भी उसके बच्चों को लेकर उड़ सकता है और पत्थर पर रखकर हज़म कर सकता है। वो रहती है तो सब घबराते हैं कि चीख-चीखकर आसमान सिर पर उठा लेगी। मदद के लिए पुकारने लगेगी। किसी की कोई गड़बड़ करने की हिम्मत नहीं पड़ती। लेकिन अब वे अकेले हैं, बिलकुल अकेले।

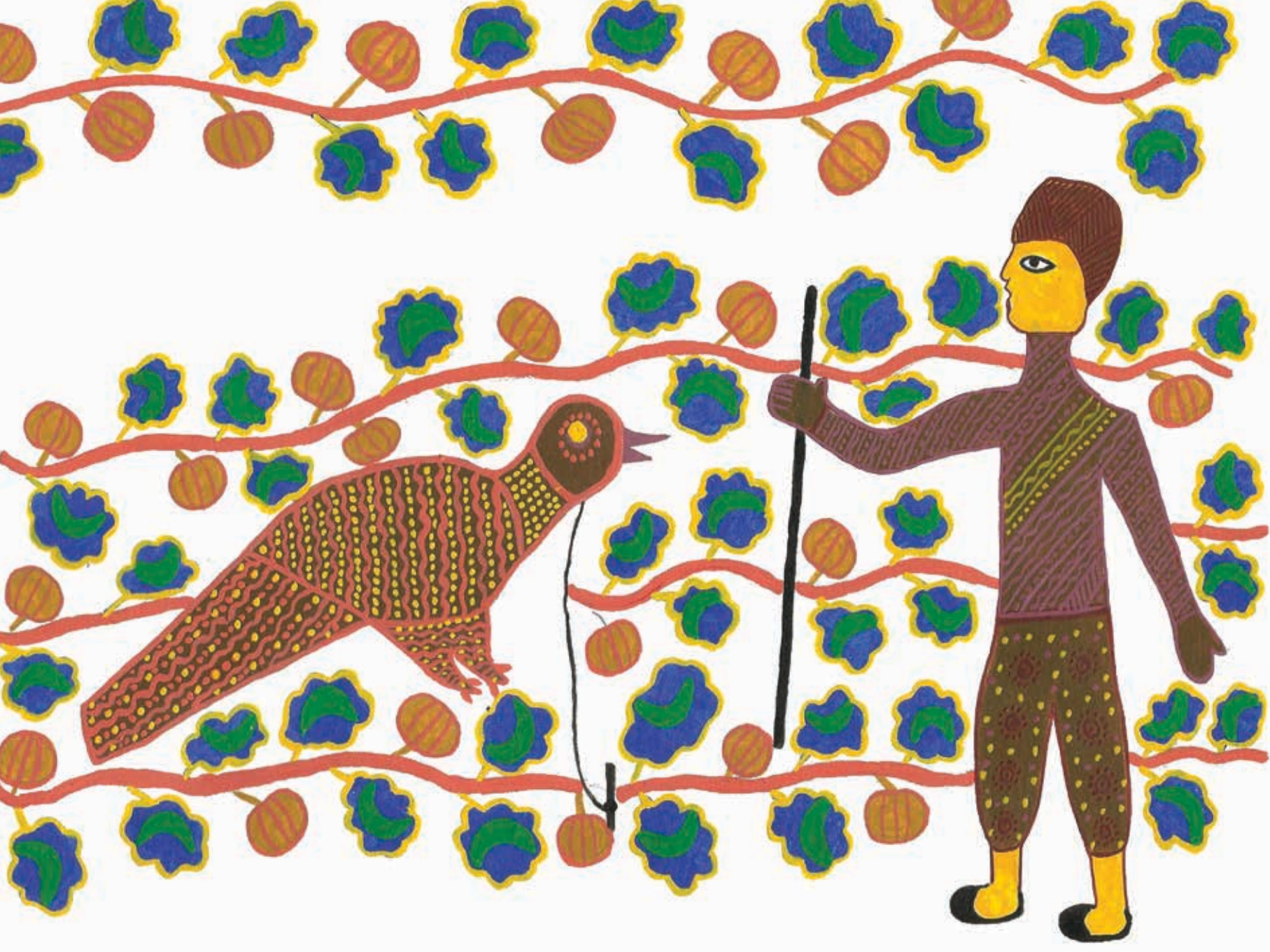

कमेड़ी बेल से बँधी हुई थी। खामोश, उदास, दुखी। तभी भेड़-बकरियाँ लिए जाता एक गड़रिया रास्ते में दिखाई दिया। कमेड़ी ने गड़रिए को सारी बात बताई और कहा, मुझे माली की कैद से छुड़ा दो। उसने ऐसी उदास आवाज़ में कहा कि लगा जैसे यह कोई रुदन-गीत हो –

"ओ भेड़ों, ओ बकरियों वाले मेरे बीर
नदिया किनारे मेरे बच्चे रे बीर
आँधी आएगी उड़ जाएँगे रे बीर
मेह आएगा बह जाएँगे रे बीर
कुकडूऊ-कूऊ।"

कमेड़ी का रुदन भरा गीत सुनकर गड़रिए का दिल हिल गया। लेकिन मुच्छड़ माली की लाठी के डर से उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह कमेड़ी को खोल दे। मन में अजीब-सी छटपटाहट लिए वह भेड़-बकरियों को हाँकता आगे बढ़ गया। कमेड़ी उसे जाते हुए देखती रही। धीरे-धीरे वह गड़रिया और उसकी भेड़-बकरियों का रेवड़ कमेड़ी की आँखों से ओझल हो गए।

भोर की हवाएँ पेड़ों के पत्तों और खेतों की फसलों में जाकर बैठ गईं। धूप के गुलाबी हिरन जंगल के वीराने में निकल गए। सुहानी सुबह चली गई। कँटीली दोपहरी पड़ने लगी। कमेड़ी के पंख, बेलों के हरे पत्ते, क्यारियों की मिट्टी सब तपने लगे। तभी धूल का बवंडर उड़ाता ऊँटों का एक लश्कर आता दिखाई दिया।

ऊँटों के लश्कर और धूल के बवंडर में से रैबारियों की औरतों के हाथों के चूड़ों की खनखनाहट अलग ही सुनाई दे रही थी। लाठियाँ ऊँची किए लाल पगड़ियों वाले पुरुषों की हाँक लगाने की आवाज़ें भी आ रही थीं। कुछ ऊँटों की पीठ पर खाटें बँधी हुई थीं। खाटों पर घुमन्तू रैबारियों की गृहस्थी का सामान चूल्हा, चाकी, गूदड़ी वगैरह गठरियों में बँधा रखा था। देगचियाँ टँगी हुई थीं।

सामान के बीच लम्बे भूरे बालों वाले बच्चे बैठे हुए थे। उन बच्चों की आँखों में आसपास के पेड़ों से लेकर सुदूर दिखाई देते रेत के धोरे समाए हुए थे। बहुत छोटे बच्चे रैबारी औरतों की पीठों से बँधे थे। पीठों पर बँधे बच्चे पता नहीं जाग रहे हैं कि सो रहे हैं। उनके रोने या हँसने की किसी भी तरह की आवाज़ नहीं आ रही है। वे तो पैदा हुए हैं तब से बस ऐसे ही पीठों पर बँधे हुए चल रहे हैं। ये बच्चे दुनिया के सबसे नन्हे घुमन्तू हैं।

रैबारी औरतों की पीठों से बँधे बच्चों को देखकर कमेड़ी के दिल में अपने बच्चों की याद उमड़ आई और वो हिलकी भर-भर के रोने लगी – "मेरे बच्चे! मेरे बच्चे!" उसने एक रैबारी की तरफ उम्मीद से झाँकते हुए कुछ ऐसे कहा कि लगा जैसे यह कोई रुदन-गीत हो –

"ओ ऊँटों के लश्कर वाले मेरे बीर

नदिया किनारे मेरे बच्चे रे बीर

आँधी आएगी उड़ जाएँगे रे बीर

मेह आएगा बह जाएँगे रे बीर

कुकडूऊ-कूऊ।"

रैबारी ने कहा – "हम तो खुद तेरी तरह बन्दी हैं बाई। चारों ओर ज्वार-बाजरे के ऊँचे-ऊँचे खेत खड़े हैं। एक भी ऊँट इन खेतों में गुम हो गया तो मालिक हलक में से ऊँट निकाल लेगा। दुख तो बहुत हो रहा है बाई लेकिन इस घड़ी तो एक-एक पल भारी है। हम कुछ नहीं कर सकते। ये तो बहता रास्ता है अभी कोई और आता होगा जिसके पास फुर्सत होगी, वह तुम्हें खोल देगा।"

देखते ही देखते ऊँटों का लश्कर रेत के समन्दर में बिला गया। उसकी जगह अब केवल रेत बगूले उड़ रहे थे।

रास्ते में आते हुओं को देखकर कमेड़ी के दिल में उम्मीद जागती लेकिन उनके चले जाने पर वो और ज़्यादा उदास हो जाती। बच्चों की भूख के बारे में सोच-सोचकर उसका दिल दुख से फटा जा रहा था। दोपहर बीत गई। साँझ गहराने लगी। चरवाहे, पशु-पक्षी सब अपने-अपने बसेरों की ओर लौटने लगे। कमेड़ी माली की बाड़ी में बँधी हुई थी।

शाम के झुटपुटे में कुछ औरतें पानी लाने के लिए निकली थीं। वे इसी रास्ते से जा रही थीं। उनमें से एक कह रही थी – "बच्चे को सोता छोड़ आई हूँ। जाग गया तो रो-रोकर बुरा हाल कर लेगा।" कमेड़ी को लगा यह अपने दूध-पीते बच्चे के लिए इतनी परेशान है। इसे मेरे बच्चों पर ज़रूर दया आएगी। उसने औरत की आँखों में झाँकते हुए ऐसे कहा कि लगा जैसे यह कोई रुदन-गीत हो –

"ओ रस्ते जाती पनिहारिन मेरी बहन

नदिया किनारे मेरे बच्चे री बहन

आँधी आएगी उड़ जाएँगे री बहन

मेह आएगा बह जाएँगे री बहन

कुकडूऊ-कूऊ।"

सुनकर उन पनिहारिनों का दिल हिल गया। उन्होंने कहा – "एक तो हमें पहले ही बहुत देर हो गई है। हमारे पति आदमी नहीं पूरे जानवर हैं। और बच्चा जाग गया तो कतई मार ही डालेंगे। बहन अभी कोई और आता होगा। ये तो बहता रास्ता है, कोई आता-जाता तुझे खोल जाएगा।"

कमेड़ी का चेहरा सूख गया। शरीर ऐसे हो गया जैसे उसमें जान ही न हो। माली उसे बँधा हुआ छोड़कर चला गया था।

आकाश में रात का अँधियारा गहराने लगा। तारे छिटकने लगे। चाँद की रोशनी बाड़ी की बेलों पर गिर रही थी। कमेड़ी पर भी गिर रही थी। आसपास नीली रोशनी फैली हुई थी। दूर झाँकने पर अँधेरे के सिवाय कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

कमेड़ी ने देखा रात के आकाश में हंस का एक जोड़ा ऊँची उड़ान भरता जा रहा है। कुछ देर बाद उसने कुरज पक्षियों के गोल को भी आकाश में घूमते हुए देखा। तभी उसे सामने के खेत की बाड़ के ऊँचे काँसों में कुछ दड़बड़ाहट-सी सुनाई दी। रात की सुहानी हवा में काँस के फूलों के सिर हिल रहे थे। कमेड़ी ने देखा सुनहरे काँसों में से चूहे निकल-निकलकर उछल-कूद करते हुए इधर ही आ रहे हैं। एक पल के लिए चूहों के दाँतों की ब्लेड से भी तीखी धार कमेड़ी की आँखों में कौंध गई। तब तक चूहों की फौज बाड़ी के अन्दर और बाहर धमा-चौकड़ी मचाने लगी थी।

कमेड़ी ने उम्मीद से भरकर चूहों से अपनी मन्द पड़ चुकी आवाज़ में कहा जो किसी धीमे रुदन-गीत की जैसी थी –

“ओ हरे-सुनहरे काँसों के निवासी मेरे बीर
नदिया किनारे मेरे बच्चे रे बीर
आँधी आएगी उड़ जाएँगे रे बीर
मेह आएगा बह जाएँगे रे बीर
कुकडूऊ-कूऊ।”

चूहों ने कमेड़ी का दुख से भरा मन्द गीत सुना तो वे कुछ अधीर से हो गए। सभी एक साथ कहने लगे – “अरे, काटो-काटो, जल्दी से धागे को काटकर फेंको। बेचारी दो नन्हे बच्चों की माँ को निर्दयी माली ने बाँधकर पटक दिया है। आज इसकी बाड़ी की तो खैर नहीं।” सबसे छोटे दुबले-पतले चूहे ने कट-कट-कट धागे को काट दिया।

कमेड़ी आज़ाद हो गई। उसके पंखों में ना जाने कहाँ से सरसर उड़ान के लिए ताकत आ गई थी। वो दुबले-पतले चूहे के गले मिलकर खूब रोई और फिर आकाश में उड़ गई।

इधर सारे छोटे-बड़े, दुबले-पतले, भारी-मोटे चूहे बाड़ी में उछल-कूद मचाने लगे। “सारे लाल टमाटरों को खा आ जाओ। खरबूजों में घुसो और तरबूज़ों में से निकलो। बेलों पर झूलो और लौकियों पर फिसलो।” सबने जमकर मौज़मस्ती की और ज़रूरत से ज़्यादा खाया। इतना खा लिया कि बोले – “अब तो सुबह ही चलेंगे, आज तो कुछ ज़्यादा हो गया।”

उधर कमेड़ी नदी पर पहुँच गई थी। अपने बच्चों से वो बस चोंच में चुग्गा डालने जितनी ही दूर थी। और बच्चे भी उससे “माँ आ गई” कहने जितनी ही दूर थे। दोपहर के बाद अब जाकर वे पहली बार बोले थे। माँ के बिना उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि बोलें क्या?

कमेड़ी का गीत
KAMEDI KA GEET

प्रभात
चित्र: सुनीता
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादकीय सहयोग: सीमा

कहानी: प्रभात, मई 2019
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्त्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

© चित्र: सुनीता, मई 2019

ईडेलगिव फाउंडेशन और पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करण: मई 2019/ 300 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 300 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-85236-89-1
मूल्य: ₹ 50.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7771-72-73
www.eklavya.in/ books@eklavya.in

मुद्रक: भण्डारी प्रेस, भोपाल, फोन: +91 755 246 3769

प्रभात

राजस्थान के करौली ज़िले के रायसना में जन्म। शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र कार्य। बच्चों के लिए गीत, कहानी, कविता, नाटक की बीस से अधिक किताबें प्रकाशित। युवा कविता समय सम्मान सन् 2012 और सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार सन् 2010।

सुनीता

राजस्थान के सवाई माधोपुर ज़िले के दाँतासूती गाँव में जन्मीं सुनीता ने पूर्वी-राजस्थान की पारम्परिक भित्ती चित्रकला माण्डना से चित्रकारी की शुरुआत की।

आगे उन्होंने कागज़ और कैनवास पर अपनी तरह से काम करना शुरू किया। सुनीता की पहली किताब *गोबल यू अप* तारा बुक्स से प्रकाशित हुई। यह किताब काफी चर्चित रही और इसका अँग्रेज़ी व कोरियन के अलावा अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 50.00

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

9 789385 236891